कक्षा - X

एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा। (कृतिका)

प्र०1. हमारी आजादी की लड़ाई में समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान कम नहीं रहा, इस कथन को लेखक ने किस प्रकार उभारा है?

उत्तर- आजादी की लड़ाई में हर वर्ग एंव धर्म के लोगों बढ़-चढ़कर भाग लिया था। परंतु इस कहानी में एक गाना गाने तथा नाच कर लोगों का मनोरंजन करने वाली दुलारी के योगदान को दर्शाती है, जिसमें दुलारी ने फेंकू सरदार की लाई विदेशी धोतियों का बंडल विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के लिए दे देती है।

2. कठोर ह्रदयी समझी जाने वाली दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर क्यों विचलित हो जाती है?

कठोर दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर विचलित हो उठती है क्योंकि उसके मन में टुन्नू का एक ~~ही~~ अलग ही स्थान था। उसे पता चल गया था कि टुन्नू उसके शरीर से नहीं, बल्कि उसकी गायन कला का प्रेमी था। शरीर से हटकर उसकी आत्मा को प्रेम करने वाले टुन्नू की मृत्यु पर ~~ही~~ ~~वह~~ वह दुःखी हो उठती है।

3. दुलारी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उ०- (क) स्वर कोकिला - दुलारी का स्वर बहुत मधुर है कजली गाने में तो उसे महारत हासिल है।

(ख) निर्भीक एंव स्वाभिमानी :- दुलारी स्वाभिमानी महिला है।

जब पुलिस का मुखबिर फेंकू सरदार उससे बदतमीजी करने की कोशिश करता है तो उसकी झाड़ू से खबर लेती है।

(ग) स्वस्थ शरीर की मल्लिका - उसका शरीर पहलवानों जैसा है। वह हर रोज कसरत करती है।

(घ) देश भक्ति - दुलारी में देश भक्ति भावना है। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के लिए वह नई नई विदेशी साड़ियां दे देती है। इससे उसकी देश भक्ति का पता चलता है।

(ड़) सच्ची प्रेमिका - दुलारी एक गौनहारिन है। उसके पेशे में प्रेम का केवल अभिनय किया जाता है। लेकिन दुलारी टुन्नू से सच्चे दिल से प्रेम करती है। वह टुन्नू के कहने पर विदेशी वस्त्रों को त्याग कर खद्दर की साड़ी पहन लेती है।

4. एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा का प्रतीकार्थ समझाइए।

यही ठैया झुलनी हेरानी हो रामा! लोक भाषा में रचित इस गीत के मुखड़े का शाब्दिक भाव है - इसी स्थान पर मेरी नाक की लौंग खो गई है। इसका प्रतीकार्थ बड़ा गहरा है। नाक में पहना जाने वाला लौंग सुहाग का प्रतीक है। अतः दुलारी के कहने का भाव यह है कि यही वह स्थान है जहाँ मेरा सुहाग लुट गया है। अर्थात इसी स्थान पर मेरी मेरे प्रेमी की हत्या की गई है।

× × × ×